प्रकाशक
रामलाल
आत्मा राम एण्ड सन्स
काश्मीरी गेट, दिल्ली

१९५०
प्रथम संस्करण
मूल्य एक रुपया

मुद्रक
नया हिन्दुस्तान प्रेस, दिल्ली।

प्रस्तावना

[illegible] कि संगीत-कला की उन्नति सरकार [illegible] भारतीय [illegible] हो रही है। इस कला की उ[illegible]ति में सभी प्रयत्नशील हैं। श्री रामावतार जी 'वीर' द्वारा रचित *'संगीत-परिचय'* के भागों में संगीत के विषय को बहुत ही सुन्दर और सरल ढंग से लिखा गया है। संगीत-कला का ज्ञान प्राप्त करने वालों के लिए ये पुस्तकें बहुत ला[illegible] सिद्ध होंगी। इनके द्वारा संगीत के विद्यार्थी प्रारम्भिक शिक्षा बहुत सुगमता से प्राप्त कर सकते हैं। आशा है कि शिक्षा-विभागों में इन्हें पूर्णतया अपनाया जायगा।

तिथि
२३-१२-५०

जीवनलाल मट्टू
संगीत सुपरवाइज़र
आल इण्डिया रेडियो
नई दिल्ली

दो शब्द

आज से पच्चीस वर्ष पूर्व जब मैंने संगीत-शिक्षण का कार्य प्रारम्भ किया था, तब से लेकर अब तक लगातार लड़के-लड़कियों के विभिन्न स्कूलों, कालिजों तथा अन्य संस्थाओं में कार्य करते हुये जो-जो कठिनाइयाँ मेरे सामने आती रही हैं, उनमें से एक मुख्य कठिनाई यह थी कि संगीत की ऐसी पुस्तकों का सर्वथा अभाव था, जिनके द्वारा संगीत में प्रवेश करने वाले अल्पायु के छात्र-छात्राओं को संगीत-शास्त्र सम्बन्धी प्रारम्भिक तथा आवश्यक ज्ञान दिया जा सके।

हर्ष की बात है कि इधर कई वर्षों से हमारी शिक्षा-संस्थाओं एवं विश्व-विद्यालयों ने संगीत की ओर भी ध्यान देना आरम्भ किया है और अपने पाठ्य-क्रम में संगीत को भी स्थान देकर इसके महत्त्व को स्वीकार किया है। इसी के परिणाम स्वरूप अब संगीत के प्रति लोगों का आकर्षण दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है। इसी सिलसिले में पंजाब के शिक्षा-विभाग ने भी अपने यहाँ के नये पाठ्य-क्रम में लड़कियों के लिये संगीत का ज्ञान छटी श्रेणी से आवश्यक कर दिया है। परन्तु अभी तक भी संगीत की ऐसी पुस्तकें नहीं हैं, जो शिक्षा-विभाग के पाठ्य-क्रम के अनुकूल हों और छात्र-छात्राओं की आवश्यकता तथा विश्व-विद्यालय के स्लेबस के अनुसार तैयार की गई हों। इसी कमी को पूरा करने के लिये 'संगीत-परिचय' की रचना की गई है।

शैली

मैंने 'संगीत-परिचय' के प्रथम तथा द्वितीय भागों को प्रश्नोत्तर के रूप में लिखा है। संगीत शास्त्र के सुप्रसिद्ध आचार्य पं० विष्णु दिगम्बर जी पुलस्कर तथा श्री विष्णु नारायण भातखण्डे आदि महानुभावों ने भी प्रारम्भिक छात्रोपयोगी अपनी रचनाओं में इसी शैली को अपनाया है। प्रश्नोत्तर की यह शैली सरलता के साथ ही सुबोध और सर्वप्रिय भी है। 'संगीत-परिचय' के तृतीय भाग की लेखन-शैली को प्रश्नोत्तर का रूप न देकर वर्णनात्मक ही रखा है परन्तु वह भी सरल और सुबोध है।

स्वर-लिपि

'संगीत-परिचय' के तीनों भागों की स्वर लिपि श्री भातखण्डे जी के मतानुसार की गई है क्योंकि संगीत की उच्च श्रेणियों में भी इसी शैली को प्रमाणिक माना गया है।

यद्यपि संगीत का ज्ञान एक अच्छे शिक्षक के विना प्राप्त करना कठिन है, फिर भी आशा है कि ये पुस्तकें संगीत के प्रारम्भिक ज्ञान को प्राप्त करने-कराने में पूर्णतया सहायक होंगी। संगीत ज्ञाताओं से मेरा विशेष अनुरोध है कि वे इन पुस्तकों की जिस त्रुटि को अनुभव करें, मुझे अवश्य ही उनसे अवगत कराने का कृपा करें। इसके लिये लेखक उनका बहुत आभारी होगा और आगामी संस्करण में उन त्रुटियों का यथोचित परिमार्जन कर दिया जायेगा। मैं श्री जीवनलाल जी मट्टू म्यूज़िक सुपरवाइज़र आल इण्डिया रेडियो, न्यू देहली का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने 'संगीत-परिचय' देखकर कुछ उपयोगी सुझाव दिए हैं। साथ ही इसकी प्रस्तावना लिखने का कष्ट किया है।

८८ बी, नया बाज़ार, दिल्ली

१५—१२—५०

रामावतार 'वीर'

स्वर-लिपियों के चिह्न

१. शुद्ध स्वरों के ऊपर या नीचे कोई चिन्ह नहीं होगा। जैसे— स रे ग म प ध नी।

२. कोमल स्वरों के नीचे—ऐसी रेखा होगी। जैसे— रे॒ ग॒ ध॒ नी॒।

३. तीव्र स्वर के ऊपर खड़ी रेखा होगी। जैसे मं

४. मध्य सप्तक की स्वरों पर कोई चिन्ह नहीं होगा। जैसे— स रे॒ रे ग॒ ग म मं प ध॒ ध नी॒ नी

५. मन्द्र सप्तक के स्वरों के नीचे बिन्दु होंगे। जैसे— स़ रे़ ग़ म़ प़ ध़ नी़

६. तार सप्तक के स्वरों के ऊपर बिन्दु दिया जावेगा। सं रें गं मं पं धं नीं

७. सम का चिन्ह +

८. खाली का चिन्ह ०

९. तालियों के चिन्ह १ २ ३ ४

१०. एक मात्रा में दो स्वर जैसे—ग म

११. विश्राम की मात्रा जैसे—स -

१२. जिन शब्दों के आगे — ऐसा चिन्ह हो, वहाँ शब्द को लम्बा करना चाहिये।

संगीत-परिचय

—०—

पाठ पहला

संगीत

प्रश्न—संगीत किसको कहते हैं ?

उत्तर—गाना, बजाना और नाचना इन तीनों कलाओं के मेल को संगीत कहते हैं।

प्रश्न—संगीत की उत्पत्ति कैसे हुई ?

उत्तर—संगीत की उत्पत्ति नाद से हुई।

प्रश्न—नाद किसको कहते हैं ?

उत्तर—वह ध्वनि जो कानों को सुनाई दे उसे नाद कहते हैं।

प्रश्न—नाद कितने प्रकार के होते हैं। उनके नाम बताओ।

उत्तर—नाद दो प्रकार के होते हैं—आहत और अनहात।

प्रश्न—संगीत की उत्पत्ति किस नाद से हुई है ?

उत्तर—संगीत की उत्पत्ति आहत नाद से हुई है।

स्वर

प्रश्न–स्वर किसको कहते हैं ?

उत्तर–वह ध्वनि जो कानों को मधुर लगे उसे स्वर कहते हैं।

प्रश्न–स्वरों की उत्पत्ति कैसे हुई ?

उत्तर–नाद से श्रुति और श्रुति से स्वरों की उत्पत्ति हुई।

प्रश्न–श्रुति किसे कहते हैं ?

उत्तर–बहुत छोटी-छोटी आवाजें जिनके बीच का फासला कम हो उन्हें श्रुति कहते हैं।

प्रश्न–मूल स्वरों की संख्या और पूरे नाम बताओ।

उत्तर–मूल स्वर सात हैं और उनके नाम ये हैं।

१-षड्ज २-ऋषभ ३-गन्धार ४-मध्यम ५-पंचम ६-धैवत ७-निषाद।

प्रश्न–मूल स्वरों के आधे नाम बताओ।

उत्तर–मूल स्वरों के आधे नाम ये हैं—

स रे ग म प ध नी

प्रश्न–शुद्ध स्वर किसको कहते हैं और कितने हैं।

उत्तर–जिन स्वरों की ध्वनि साधारण रूप से चढ़े और उतरे उन स्वरों को शुद्ध स्वर कहते हैं। शुद्ध स्वर सात हैं:—

स रे ग म प ध नी

प्रश्न–शुद्ध स्वर कितनी प्रकार के होते हैं उनकी संख्या और नाम बताओ।

उत्तर–शुद्ध स्वर दो प्रकार के होते हैं- चल और अचल।

प्रश्न–चल स्वरों की संख्या और नाम बताओ।

उत्तर–चल स्वर पाँच हैं—रे ग म ध और नी।

प्रश्न–अचल स्वरों की संख्या और नाम बताओ।

उत्तर–अचल स्वर दो हैं—स और प

प्रश्न–कोमल स्वर किसको कहते हैं। उनके नाम और संख्या बताओ?

उत्तर–जिन स्वरों की ध्वनि शुद्ध स्वरों से उतरी हुई अथवा हल्की होती है उन स्वरों को कोमल स्वर कहते हैं। कोमल स्वर चार हैं जैसे—

रे॒ ग॒ ध॒ और नी॒

प्रश्न–तीव्र स्वर किसको कहते हैं और उसका नाम क्या है?

उत्तर–जिस स्वर की ध्वनि शुद्ध स्वर की ध्वनि से चढ़ी हुई हो उसे तीव्र स्वर कहते हैं। वह स्वर केवल मं है।

पाठ दूसरा

सप्तक ज्ञान

प्रश्न–सप्तक किसको कहते हैं और संगीत में कितने सप्तक माने गये हैं।

उत्तर– सात स्वरों के समूह को सप्तक कहते हैं और संगीत में तीन सप्तक माने गये हैं।

(१) मध्य-सप्तक (२) मन्द्र सप्तक (३) तार-सप्तक।

प्रश्न–मध्य सप्तक की ध्वनि का स्थान कौन सा है ?

उत्तर–मध्य सप्तक की ध्वनि साधारण होने के कारण इसका स्थान कंठ माना गया है।

प्रश्न–मन्द्र सप्तक की ध्वनि का स्थान कौन सा है ?

उत्तर–मन्द्र सप्तक की ध्वनि मध्य सप्तक की ध्वनि से धीमी होने के कारण इसका स्थान छाती माना गया है।

प्रश्न–तार सप्तक की ध्वनि का स्थान कौन सा है ?

उत्तर–तार सप्तक की ध्वनि मध्य सप्तक की ध्वनि से चढ़ी होने के कारण इसका स्थान तालू माना गया है।

प्रश्न–सप्तक में लगने वाले शुद्ध कोमल और तीव्र स्वरों की संख्या और नाम बताओ।

उत्तर–सप्तक में सात स्वर शुद्ध, चार स्वर कोमल और एक स्वर तीव्र लगता है। शुद्ध स्वरों के नाम–

स रे ग म प ध नी=

कोमल स्वरों के नाम रे॒ ग॒ ध॒ नी॒=तीव्र स्वर का नाम म॑।

पाठ तीसरा

ठाठ और राग

ठाठ

प्रश्न–ठाठ किसको कहते हैं?

उत्तर–सप्तक में लगनेवाले बारह स्वरों में से किन्हीं सात स्वरों के समूह को ठाठ कहते हैं।

प्रश्न–संगीत में कितने ठाठ माने गये हैं?

उत्तर–संगीत में दस ठाठ माने गये हैं।

संगीत के दस ठाठ

१. बिलावल ठाठ
२. कल्याण ठाठ
३. खमाज ठाठ
४. भैरव ठाठ
५. काफी ठाठ
६. आसावरी ठाठ
७. भैरवी ठाठ
८. मारवा ठाठ
९. तोड़ी ठाठ
१०. पूर्वी ठाठ

राग

प्रश्न–रागों की उत्पत्ति कैसे हुई?

उत्तर–रागों की उत्पत्ति ठाठों से मानी गई है।

प्रश्न–राग कैसे बनते हैं।

उत्तर–राग स्वरों के मेल से बनते हैं।

प्रश्न–रागों की मुख्य जातियाँ और नाम बताओ।

उत्तर–रागों की मुख्य जातियाँ तीन हैं—

(१) सम्पूर्ण (२) षाडव (३) औडव।

प्रश्न–रागों की उपजातियों के नाम और संख्या बताओ।

उत्तर–रागों की उपजातियाँ छः हैं जैसे—

(१) सम्पूर्ण षाडव (२) सम्पूर्ण औडव
(३) षाडव सम्पूर्ण (४) षाडव औडव
(५) औडव सम्पूर्ण (६) औडव षाडव।

प्रश्न–सम्पूर्ण जाति के रागों की स्वर संख्या बताओ।

उत्तर–सम्पूर्ण जाति के रागों में सात स्वर लगते हैं।

प्रश्न–षाडव जाति के रागों की स्वर संख्या बताओ।

उत्तर–षाडव जाति के रागों में छः स्वर लगते हैं।

प्रश्न–औडव जाति के रागों की स्वर संख्या बताओ।

उत्तर–औडव जाति के रागों में पाँच स्वर लगते हैं।

प्रश्न–आरोही किसको कहते हैं?

उत्तर–स्वरों के चढ़ाव को आरोही कहते हैं।

प्रश्न–अवरोही किसको कहते हैं?

उत्तर–स्वरों के उतराव को अवरोही कहते हैं।

प्रश्न–रागों में आरोही और अवरोही का होना क्यों आवश्यक है?

उत्तर–आरोही तथा अवरोही से ही राग की जाति पहचानी जाती है।

प्रश्न–राग में वादी स्वर का महत्त्व क्या है ?

उत्तर–राग में जो स्वर अन्य स्वरों से अधिक लगे उसे वादी स्वर कहते हैं। वादी स्वर राग का राजा स्वर माना जाता है।

प्रश्न–राग में संवादी स्वर का क्या महत्त्व है।

उत्तर–राग में संवादी स्वर वादी स्वर की सहायता करता है। इसलिए यह स्वर राग का मंत्री स्वर माना गया है।

प्रश्न–गीत में कितने भाग होते हैं ?

उत्तर–गीत में स्थाई और अन्तरा ऐसे दो भाग होते हैं।

प्रश्न–स्थाई किसको कहते हैं ?

उत्तर–गीत के पहले भाग को स्थाई कहते हैं।

प्रश्न–अन्तरा किसको कहते हैं ?

उत्तर–गीत के दूसरे भाग को अन्तरा कहते हैं।

पाठ चौथा

राग भैरवी

प्रश्न—भैरवी राग कौन से ठाठ से उत्पन्न होता है ?

उत्तर—भैरवी राग भैरवी ठाठ से उत्पन्न होता है ।

प्रश्न—भैरवी राग किस जाति का राग है ?

उत्तर—भैरवी राग सम्पूर्ण जाति का राग है ।

प्रश्न—भैरवी राग में कौन - कौन से स्वर कोमल और शुद्ध लगते हैं ?

उत्तर—भैरवी राग में रे ग ध नी यह चार स्वर कोमल और अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं ।

प्रश्न—भैरवी राग का वादी स्वर कौन सा है ?

उत्तर—भैरवी राग का वादी स्वर 'म' है ।

प्रश्न—भैरवी राग का संवादी स्वर कौन सा है ?

उत्तर—भैरवी राग का संवादी स्वर 'स' है ।

प्रश्न—भैरवी राग के गाने-बजाने का समय बताओ ।

उत्तर—भैरवी राग प्रातः दिन के ९ बजे तक गाया-बजाया जाता है ।

प्रश्न—भैरवी राग के आरोही के स्वर उच्चारण करो ।

उत्तर—स रे ग म प ध नी सं

प्रश्न—भैरवी राग के अवरोही के स्वर उच्चारण करो ।

उत्तर—सं नी ध प म ग रे स

पाठ पाँचवाँ

राग आसावरी

प्रश्न–आसावरी राग कौन से ठाठ से उत्पन्न होता है?

उत्तर–आसावरी राग आसावरी ठाठ से उत्पन्न होता है।

प्रश्न–आसावरी राग किस जाति का राग है?

उत्तर–आसावरी राग औडव सम्पूर्ण जाति का राग है। इसके आरोह में ग॒ और नी॒ यह दो स्वर नहीं लगते अवरोह सम्पूर्ण हैं।

प्रश्न–आसावरी राग में कौन-कौन से स्वर लगते हैं?

उत्तर–आसावरी राग में ग॒ ध॒ नी॒ यह तीन स्वर कोमल अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

प्रश्न–आसावरी राग का वादी स्वर कौन सा है?

उत्तर–आसावरी राग का वादी स्वर 'ध॒" है।

प्रश्न–आसावरी राग का संवादी स्वर कौन सा है?

उत्तर–आसावरी राग का संवादी स्वर 'ग॒' है।

प्रश्न–आसावरी राग के गाने-बजाने का समय बताओ?

उत्तर–आसावरी राग दिन के १० बजे तक गाया-बजाया जाता है।

प्रश्न–आसावरी राग के आरोही के स्वरों का उच्चारण करो।

उत्तर–स रे म प ध॒ सं

प्रश्न–आसावरी राग के अवरोही के स्वरों का उच्चारण करो?

उत्तर–सं नी॒ ध॒ प म ग॒ रे स

पाठ छठा

राग खमाज

प्रश्न—खमाज राग कौन से ठाठ से उत्पन्न होता है ?

उत्तर—खमाज राग खमाज ठाट से उत्पन्न होता है।

प्रश्न—खमाज राग किस जाति का राग है ?

उत्तर--खमाज राग षाडव-सम्पूर्ण जाति का राग है। इसके आरोह में "रे" स्वर नहीं लगता।

प्रश्न--खमाज राग में कौन सा स्वर कोमल लगता है ?

उत्तर--खमाज राग में नी स्वर कोमल लगता हैं।

प्रश्न—खमाज राग का वादी स्वर कौनसा है ?

उत्तर—खामाज राग का वादी स्वर "ग" है।

प्रश्न—खमाज राग का संवादी स्वर कौन सा है ?

उत्तर—खमाज राग का संवादी स्वर "नी" है

प्रश्न—खमाज राग के गाने-बजाने का समय बताओ।

उत्तर—खमाज राग के गाने-बजाने का समय रात्रि का दूसरा पहर है।

प्रश्न—खमाज राग के आरोही के स्वरों का उच्चारण करो ?

उत्तर--स ग म प नी सं

प्रश्न--खमाज राग के अवरोही के स्वरों का उच्चारण करो।

उत्तर--सं नी ध प म ग रे स

पाठ सातवाँ

राग देस

प्रश्न—देस राग कौन से ठाठ से उत्पन्न होता है ?

उत्तर—देस राग खमाज ठाट से उत्पन्न होता है।

प्रश्न—देश राग किस जाति का राग है ?

उत्तर—देस राग सम्पूर्ण जाति का राग है।

प्रश्न—देस राग में कौन-कौन से स्वर लगते हैं ?

उत्तर—देस राग में नी दोनों और अन्य सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

प्रश्न—देस राग का वादी स्वर कौन-सा है ?

उत्तर—देस राग का वादी स्वर 'रे' है।

प्रश्न—देस राग का संवादी स्वर कौन सा है ?

उत्तर—देस राग का संवादी स्वर 'प' है।

प्रश्न—देस राग के गाने बजाने का समय बताओ।

उत्तर—देस राग के गाने बजाने का समय रात्रि का दूसरा पहर है।

प्रश्न—देस राग के आरोही के स्वरों का उच्चारण करो।

उत्तर—स रे म प नी सं

प्रश्न—देस राग के अवरोही के स्वरों का उच्चारण करो।

उत्तर—सं नी ध प म ग रे ग स

पाठ आठवाँ

लय, ताल और काल

लय

प्रश्न–संगीत में लय किसको कहते हैं ?

उत्तर–गाने, बजाने और नाचने की एक जैसी चाल को लय कहते हैं।

प्रश्न–संगीत में लय कितनी प्रकार की मानी गई हैं

उत्तर–संगीत में लय तीन प्रकार की मानी गई है।

(१) मध्यलय (२) विलम्बितलय (३) द्रुतलय

प्रश्न–मध्य लय किसको कहते हैं ?

उत्तर–जो चाल साधारण हो न अधिक तेज और न अधिक हल्की उसे मध्य लय कहते हैं।

प्रश्न–विलम्बित लय किसे कहते हैं ?

उत्तर–जो लय मध्य लय से धीमी हो, उसे विलम्बित लय कहते हैं।

प्रश्न–द्रुत लय किसे कहते हैं।

उत्तर–जो लय मध्य लय से दुगनी तेज हो उसे द्रुतलय कहते हैं।

प्रश्न–ताल किसको कहते हैं।

उत्तर–नियमबद्ध समय को ताल कहते हैं।

प्रश्न—काल किसे को कहते हैं !

उत्तर—ताल के ख़ाली भाग को काल या ख़ाली कहते हैं। ख़ाली के स्थान पर दोनों हाथों को खोल दिया जाता है ।

प्रश्न—ताली किसको कहते हैं ?

उत्तर—दो हाथों को आपस में टकराने से जो ध्वनि पैदा होती है उसे ताली कहते हैं।

प्रश्न—संगीत में ताल का होना क्यों आवश्यक है ?

उत्तर-(१) ताल के बिना संगीत अधूरा और रूखा-फीका-सा रहता है।

(२) ताल गाने और बजाने को नियमबद्ध रखता है।

प्रश्न—ताल की उत्पत्ति कैसे हुई ?

उत्तर—ताल की उत्पत्ति मात्राओं के मेल से हुई।

प्रश्न—मात्रा का समय कितना है ?

उत्तर—मात्रा का समय एक सेकेण्ड माना गया है।

प्रश्न—सम किसको कहते हैं ?

उत्तर—जहाँ से ताल शुरू होता है उस स्थान को सम कहते हैं। सम ताल की पहली मात्रा पर होता है।

ताल दादरा

प्रश्न—दादरा ताल में कितनी मात्राएँ होती हैं।

उत्तर—दादरा ताल में छः मात्राएँ होती हैं।

प्रश्न—दादरा ताल में कितने भाग कितनी-कितनी मात्राओं के होते हैं ?

उत्तर—दादरा ताल में दो भाग तीन-तीन मात्राओं के होते हैं।

प्रश्न—दादरा ताल में किस मात्रा पर ताली और किस मात्रा पर ख़ाली का स्थान है।

उत्तर—दादरा ताल की पहली मात्रा पर ताली और चौथी मात्रा पर ख़ाली का स्थान होता है।

प्रश्न—दादरा ताल का सम किस मात्रा पर है ?

उत्तर—दादरा ताल का सम पहली मात्रा पर है।

प्रश्न—दादरा ताल की ताली और ख़ाली मात्राओं की गिनती के आधार पर दो।

उत्तर

ताली			ख़ाली		
+			०		
एक	दो	तीन	चार	पाँच	छै

प्रश्न—दादरा ताल के तबले के बोल ताली और खाली सहित उच्चारण करो।

उत्तर

ताली			ख़ाली		
+			०		
धा	धिन	ना	धा	तिन	ना
१	२	३	४	५	६

ताल कहरवा

प्रश्न–कहरवा ताल में कितनी मात्राएँ होती हैं ?

उत्तर–कहरवा ताल में आठ मात्राएँ होती हैं।

प्रश्न–कहरवा ताल में कितने भाग कितनी-कितनी मात्राओं के होते हैं ?

उत्तर–कहरवा ताल में दो भाग चार-चार मात्राओं के होते हैं।

प्रश्न–कहरवा ताल में किस मात्रा पर ताली और किस मात्रा पर ख़ाली का स्थान है ?

उत्तर–कहरवा ताल में पहली मात्रा पर ताली और पाँचवी मात्रा पर ख़ाली का स्थान है।

प्रश्न–कहरवा ताल का सम कौन सी मात्रा पर है ?

उत्तर–कहरवा ताल का सम पहली मात्रा पर है।

प्रश्न–कहरवा ताल की ताली और ख़ाली मात्राओं की गिनती के आधार पर दो ?

उत्तर

ताली				ख़ाली			
+				०			
एक	दो	तीन	चार	पाँच	छः	सात	आठ

प्रश्न–कहरवा ताल के तबले के बोल ताली और ख़ाली सहित उच्चारण करो।

उत्तर ताली				खाली			
+				०			
धा	गे	ना	ति	ता	के	धिन	ना
१	२	३	४	५	६	७	८

ताल कहरवा मात्रा ४

×			
धागे	नाती	ताके	धिन्ना
१	२	३	४

ताल तीन

प्रश्न—तीन ताल में कितनी मात्राएँ होती हैं ?

उत्तर—तीन ताल में सोलह मात्राएँ होती हैं।

प्रश्न—तीन ताल में कितनी-कितनी मात्राओं के कितने भाग होते हैं ?

उत्तर—तीन ताल में चार-चार मात्राओं के चार भाग होते हैं।

प्रश्न—तीन ताल के चारों भागों में से कितने भाग ताली के और कितने भाग ख़ाली के होते हैं ?

उत्तर—तीन ताल में एक भाग ख़ाली का और तीन भाग तालियों के होते हैं।

प्रश्न—तीन ताल में कौन-कौन-सी मात्रा पर ताली और कौन-सी मात्रा पर ख़ाली का स्थान है ?

उत्तर—तीन ताल में एक पाँच और तेरहवीं मात्रा पर ताली और नौवीं मात्रा पर ख़ाली का स्थान है ।

प्रश्न—तीन ताल में सम कौन सी मात्रा पर है ?

उत्तर—तीन ताल में सम पहली मात्रा पर है ।

प्रश्न—तीन ताल की ताली और खाली मात्राओं की गिनती के आधार पर दो ?

उत्तर पहली ताली	दूसरी ताली
+	२
एक दो तीन चार	पांच छः सात आठ
खाली	तीसरी ताली
०	३
नौ दस ग्यारह बारह	तेरह चौदह पंद्रह सोलह

प्रश्न—तीन ताल के तबले के बोल ताली और खाली सहित उच्चारण करो ।

उत्तर—

+				२				०				३			
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

पाठ नौवां

स्वर साधन और गायन विधि

१. स्वर साधन प्रातःकाल करना चाहिये।

२. स्वर साधन करते समय कण्ठ ध्वनि को सुरीला बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

३. स्वर साधन करते समय किसी प्रकार की लज्जा, भय, संकोच नहीं करना चाहिये।

४. स्वर साधन करते समय आकृति भङ्ग नहीं होनी चाहिये।

५. स्वर साधन करते समय स्वरों का उच्चारण खुले कंठ से करना चाहिये।

६. किसी गीत को गाने से पूर्व गीत के शब्दों को कंठस्थ कर लेना चाहिये।

७. गीत को गाते समय उसको लय ताल का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिये।

८. गीत को गाते समय उसके शब्दों का उच्चारण शुद्ध और पूरा-पूरा होना चाहिए।

———

पाठ दसवाँ

स्वर साधन

स

स रे

स रे ग

स रे ग म

स रे ग म प

स रे ग म प ध

स रे ग म प ध नी

स रे ग म प ध नी सं

सं

सं नी

सं नी ध

सं नी ध प

सं नी ध प म

सं नी ध प म ग

सं नी ध प म ग रे

सं नी ध प म ग रे स

——

शुद्ध स्वर

१

आरोही   स रे ग म प ध नी सं
अवरोही   सं नी ध प म ग रे स

२

आरोही   सस रेरे गग मम पप धध नीनी संसं
अवरोही   संसं नीनी धध पप मम गग रेरे सस

३

आरोही   सरग रगम गमप मपध पधनी धनीसं
अवरोही   संनीध नीधप धपम पमग मगरे गरेस

४

आरोही ससर ररग गगम ममप पपध धधनी नीनीसं
अवरोही संसंनी नीनीध धधप पपम ममग गगरे रेरेस

५

आरोही   सरेगम रेगमप गमपध मपधनी पधनीसं
अवरोही   संनीधप नीधपम धपमग पमगरे मगरेस

६

आरोही   सरेगमप रगमपध गमपधनी मपधनीसं
अवरोही   संनीधपम नीधपमग धपमगरे पमगरेस

७

आरोही   सरेगमपध रेगमपधनी गमपधनीसं
अवरोही   संनीधपमग नीधपमगरे धपमगरेस

८

आरोही सरेसरेग रेगरेगम गमगमप मपमपध पधपधनी
धनीधनीसं।

अवरोही संनीसंनीध नीधनीधप धपधपम पमपमग
मगमगरे गरेगरेस।

९

आरोही सरेसरेगम रेगरेगमप गमगमपध मपमपधनी
पधपधनीसं।

अवरोही संनीसंनीधप नीधनीधपम धपधपमग पमपमगरे
मगमगरेस।

१०

आरोही सरगमसरगमप रगमप रगमपध गमपध गमपधनी
मपधनी मपधनीसं।

अवरोही संनीधप संनीधपम नीधपम नीधपमग धपमगधपम
पमगरपमगरेस।

पाठ ११
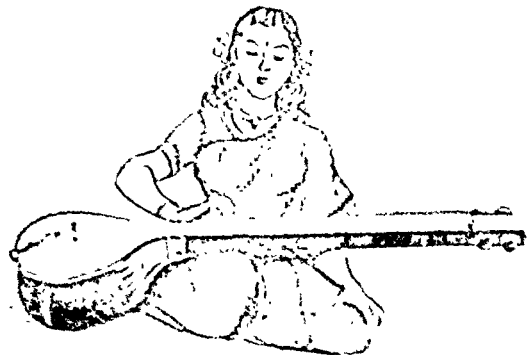
कोमल स्वर साधन

रे कोमल और अन्य सब शुद्ध स्वर

१

आरोही   स रे ग म प ध नी सं
अवरोही   सं नी ध प म ग रे स

२

आरोही   सस रेरे गग मम पप धध नीनी संसं
अवरोही   संसं नीनी धध पप मम गग रेरे सस

३

आरोही   सरेग रेगम गमप मपध पधनी धनीसं
अवरोही   संनीध नीधप धपम पमग मगरे गरेस

४

आरोही   ससरे रेरेग गगम ममप पपध धधनी नीनीसं
अवरोही   संसंनी नीनीध धधप पपम ममग गगरे रेरेस

५

आरोही   सरेगम रेगमप गमपध मपधनी पधनीसं
अवरोही   संनीधप नीधपम धपमग पमगरे मगरेस

६

आरोही   सरेगमप रेगमपध गमपधनी मपधनीसं
अवरोही   संनीधपम नीधपमग धपमगरे पमगरेस

रे, ग, कोमल और अन्य सब शुद्ध स्वर

१

आरोही सरे ग म प ध नी सं

अवरोही सं नी ध प म ग रे स

२

आरोही सस रेरे गग मम पप धध नीनी संसं

अवरोही संसं नीनी धध पप मम गग रेरे सस

३

आरोही सरेग रेगम गमप मपध पधनी धनीसं

अवरोही संनीध नीधप धपम पमग मगरे गरेस

४

आरोही ससरे रेरेग गगम ममप पपध धधनी नीनीसं

अवरोही संसंनी नीनीध धधप पपम ममग गगरे रेरेस

५

आरोही सरेगम रेगमप गमपध मपधनी पधनीसं

अवरोही संनीधप नीधपम धपमग पमगरे मगरेस

६

आरोही सरेगमप रेगमपध गमपधनी मपधनीसं

अवरोही संनीधपम नीधपमग धपमगरे पमगरेस

रे, ग, ध, कोमल और अन्य सब शुद्ध स्वर

१

आरोही   स रे ग म प ध नी सं

अवरोही   सं नी ध प म ग रे स

२

आरोही   सस रेरे गग मम पप धध नीनी संसं

अवरोही   संसं नीनी धध पप मम गग रेरे सस

३

आरोही   सरेग रेगम गमप मपध पधनी धनीसं

अवरोही   संनीध नीधप धपम पमग मगरे गरेस

४

आरोही   ससरे रेरेग गगम ममप पपध धधनी नीनीसं

अवरोही   संसंनी नीनीध धधप पपम ममग गगरे रेरेस

५

आरोही   सरेगम रेधमप गमपध मपधनी पधनीसं

अवरोही   संनीधप नीधपम धपमग पमगरे मगरेस

६

आरोही   सरेगम रेगमपध गमपधनी मपनीधसं

अवरोही   सनीधपम नीधपमग धपमगरे पमगरेस

रे, ग, ध, नी, कोमल और अन्य सब शुद्ध स्वर

१

आरोही स रे ग म प ध नी सं

अवरोही सं नी ध प म ग रे स

२

आरोही सस रेरे गग मम पप धध नीनी संसं

अवरोही संसं नीनी धध पप मम गग रेरे सस

३

आरोही सरेग रेगम गमप मपध पधनी धनीसं

अवरोही संनीध नीध र धपम पमग मगरे गरेस

४

आरोही ससरे रेरेग गगम ममप पपध धधनी नीनीसं

अवरोही संसंनी नीनीध धधप पपम ममग गगरे रेरेस

५

आरोही सरेगम रेगमप गमपध मपधनी पधनीसं

अवरोही संनीधप नीधपम धपमग पमगरे मगरेस

६

आरोही सरेगमप रेगमपध गमपधनी मपधनीसं

अवरोही संनीधपम नीधपमग धपमगरे पमगरेस

प्रश्न

(१)

स रे॒ ग म प ध नी सं—स नी ध प म ग रे॒ स।

(२)

स रे ग॒ म प ध नी सं—सं नी ध प म ग॒ रे स।

(३)

स रे ग म प ध॒ नी सं—सं नी ध॒ प म ग रे स।

(४)

स रे ग म प ध नी॒ सं—सं नी॒ ध प म ग रे स।

(५)

स रे॒ ग म प ध नी॒ सं—सं नी॒ ध प म ग रे॒ स।

(६)

स रे॒ ग म प ध॒ नी सं—सं नी ध॒ प म ग रे॒ स।

(७)

स रे॒ ग॒ म प ध नी सं—सं नी ध प म ग॒ रे॒ स।

(८)

स रे ग॒ म प ध नी॒ सं—सं नी॒ ध प म ग॒ रे स।

(९)

स रे ग॒ म प ध॒ नी सं—सं नी ध॒ प म ग॒ रे स।

———

पाठ १२

ताल सहित अलंकार

(१)

सम	दूसरी ताली	खाली	तीसरी ताली
		स— स—	रे ग म प
रे— रे—	ग म प ध	ग— ग—	म प ध नी
म— म—	प ध नी सं		

अवरोही

		सं— सं—	नी ध प म
नी— नी—	ध प म ग	ध— ध—	प म ग रे
प— प—	म ग रे स		

(२)

आरोही

×	२	०	३
स रे ग म	स— स—	रे ग म प	रे— रे—
ग म प ध	ग— ग—	म प ध नी	म— म—
प ध नी सं	प— प—	स रे ग म	प ध न सं

अवरोही

सं नी ध प	सं— सं—	नी ध प म	नी— नी—
ध प म ग	ध— ध—	प म ग रे	प— प—
म ग रे स	म— म—	सं नी ध प	म ग रे स

आरोही

×	२	०	३
स ग रे म	प— प—	रे म ग प	ध— ध—
ग प म ध	नी— नी—	म ध प नी	सं— सं—

अवरोही

सं ध नी प | म— म— | नी प ध म | ग— ग—
ध म प ग | रे— रे— | प ग म रे | स— स—

(२)

आरोही

स— स रे | रे ग म— | र— रे ग | ग म प—
ग— ग म | म प ध— | म— म प | प ध नी—
प— प ध | ध नी सं— | प ध नी सं | सं नी ध प

अवरोही

सं— सं नी | नी ध प— | नी— नी ध | ध प म—
ध— ध प | प म ग— | प— प म | म ग रे—
म— म ग | ग रे स— | स र ग म | म ग रे स

आरोही

स— स रे | ग म प ध | रे— रे ग | म प ध नी
ग— ग म | प ध नी सं | स र ग म | प ध नी सं

अवरोही

सं— सं नी | ध प म ग | नी— नी ध | प म ग रे
ध— ध प | म ग रे स | सं नी ध प | म ग रे स

आरोही

स रे ग म | म— म— | रे ग म प | प— प—
ग म प ध | ध— ध— | म प ध नी | नी— नी—
प ध नी सं | सं— सं— | स रे ग म | प ध नी सं

अवरोही

सं नी ध प | प— प— | नी ध प म | म— म—
ध प म ग | ग— ग— | प म ग रे | रे— रे—
म ग रे स | स— स— | सं नी ध प | म ग रे स

कोमल स्वर

१

×	२	०	२
स रे ग म	प ध नी सं	सं नी ध प	म ग रे स

२

स रे ग म	रे ग म प	ग म प ध	म प ध नी
प ध नी सं	सं नी ध प	नी ध प म	ध प म ग
प म ग रे	स ग रे स	स रे ग म	म ग रे स

३

स रे ग ग	रे ग म म	ग म प प	म प ध ध
प ध नी नी	ध नी सं सं	सं नी ध ध	नी ध प प
ध प म म	प म ग ग	म ग रे रे	ग रे स स

४

स रे स रे	ग म प प	रे ग रे ग	म प ध ध
ग म ग म	प ध नी नी	म प म प	ध नी सं सं
सं नी सं नी	ध प म म	नी ध नी ध	प म ग ग
ध प ध प	म ग रे रे	प म प म	ग रे स स

———

भजन मीरा

राग खमाज

कोई कहियो रे प्रभू आवन को ।
आवन की मन भावन की ॥
आप न आये लिख नहीं भेजी ।
बांणा पड़ी ललचावन की ॥
ये दोउ नैना कैह्यो नहीं मानत ।
नदियाँ बहें जैसे सावण की ॥
कहा करूं कछु वस नहीं मेरो ।
पांख नहीं उड़ जावन की ॥
'मीरा' कहे प्रभू कवरे मिलोगे ।
चेरी भई हूँ तेरे दावन को ॥

राग खमाज

(ताल कहरवा मात्रे ४)

स्थाई

×	×	×	×
१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
ग म	प नी सं —	नी ध प प	म ग रे ग
कोई	क हि यो —	रे — प्र भू	आ — व न
प— — —	ग — ध ध	ध — प ध	नी सं नी ध
की— — —	आ — व न	की— म न	भा — व न
प — ग म			
की— कोई			

अन्तरा

म — प प	नी — नी —	सं सं सं रें	नी — सं —
आ — प न	आ — ये —	लि ख न हीं	भे — जी —
प — प प	नी — सं सं	प नीं सं रें	सं नी ध प
वां — ण प	ड़ी — ल ल	चा — य न	की — — —
म ग ग म			
ई — कोई			

पाठ १४

राग आसावरी

१ इस राग के आरोह में पांच और अवरोह में सात स्वर लगते हैं अर्थात इसके आरोह में 'ग नी' यह दो स्वर नहीं लगते।

२ इस राग में 'ग ध नी' कोमल बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

३ इस राग का वादी स्वर 'ध' है

४ इस राग का संवादी स्वर 'ग' है

५ इस राग के गाने बजाने का समय प्रातः काल है।

आरोही = स रेमप ध सं

अवरोही = सं नी ध प मगरेस

राग आसावरी

(ताल सरगम ताल तीन)

स्थाई

×	२	०	३
		प सं नी सं	ध प म प
ग — रे स	र म प म	ग रे स स	र म प ध
सं नी ध प	म ग रे स		

अंतरा

		म — प प	ध — नी ध
सं — सं —	रें नी सं सं	ध — नी ध	सं — सं रें
गं रें सं नी	ध प म ग		

भजन सूरदास

राग आसावरी

अब मैं नाच्यो बहुत गोपाल।

काम क्रोध को पहिरि चोलना, कंठ विषय की माल॥
माया मोह के नूपुर बाजत, निन्दा शब्द रसाल।
भरम भरयो मन भयो पखावज, चलत कुसंगत चाल॥
तृसना नाद करत घट भीतर, नाना विधि दे ताल।
माया को कटि फेंटा बाँध्यो, लोभ तिलक दे भाल॥
कोटिक कला काछि देखराई, जल थल सुधि नहीं काल।
'सूरदास' की सबै अविद्या, दूरि करो नन्द लाल॥

——

(ताल तीन मात्रा १६)

स्थाई

×	२	०	३
	पधु पम गुरे स	रे — म म	प — धु म
	अ ब मैं —	ना — च्यो	बहु त गो
प — — धु	पधु पम गुरे स	गु — गु गु	— गु गु —
पा — — ल	अ ब मैं —	का — म क्रो	— ध को —
रे — रे रे	रे गु रे स	रे — म म	प — धु म
प हि री के	चो — ल ना	कं ठ वि ष	यों — की —
प — — धु	पधु पम गुरे स		
मा — — ल	अ ब मैं —		

अन्तरा

		म — प —	धु — नी धु
		मा —या—	मोह के —
सं — सं सं	रें नी सं —	प — प —	सं सं सं रें
नू — प र	बा — ज त	निं —दा—	श ब द र
नी रें सं नी	धु — प —	सं सं नी सं	धु प म प
सा — — —	आ— — ल	भ र म भ	रे यो म न
गु — रे स	रे रे स —	रे रे म म	प — धु म
भै धौ प	खा — व ज	च ल त कु	सं ग ग त
प — — धु	प धु पम गुर स		
चा — —ल	अ व मैं —		

—

भजन सूरदास

राग आसावरी

तीन ताल

निसिदिन वरसत नैन हमारे।
सदा रहत पावस ऋतु हमपर,
जबतें स्याम सिधारे ॥

अंजन थिर न रहत अंखियन में,
कर कपोल भये कारे ।
कंचुकि—पट सूखत नहिं कबहूँ,
उर बिच बहत पनारे ।
आँसू सलिल भये पग थाके,
बहे जात सित तारे ।
'सूरदास' अब डूबत है ब्रज,
काहे न लेत उबारे ॥

राग आसावरी

ताल तीन मात्रा १६

स्थाई

×	२	०	३
		प सं नी सं	धृ प म प
		नि स दि न	ब र स त
गृ — रे स	रे म प —	गृ गृ — गृ	गृ गृ गृ —
नै — न ह	मा — रे —	स दा — र	ह त पा —
रे रे रे म	गृ रे स स	रे रे म —	प — प सं
ब न रि तु	ह म प र	ज ब ते —	श्या — म स
सं गृं रें सं	नीसं रेंसं नीध प		
धा — आ —	रे — — —		

अन्तरा

		म — प प	धु धु नी धु
		आं — ज न	थि र न र
सं सं सं —	रें नी सं —	धु प धु सं	— सं सं रें
ह त अ खि	य न में —	क र क पो	— ल भ ये
संगंरेंसंनीसंरेंसं	नीसं नीधु प—	प सं नी सं	धु प म प
का — — —	रे — रे —	क न चु क	प ट सू —
गु — रे स	रे म प —	प प धु सं	सं सं रें सं
ख त न हीं	क ब हूं —	उ र त्रि च	ब ह त प
गं — रें सं	नी धु प —		
ना — — —	र — — —		

भजन मीरा

राग आसावरी

ताल तीन

मैं तो साँवर के रंग राची।
साजि सिंगार बाँधि पग घुँघरू,
लोक-लाज तजि नाची ॥ १ ॥
गई कुमति लई साधु की संगति,
भगत रूप भई साँची ।
गाय गाय हरिके गुण निस दिन,
काल-व्यालसुँ बाँची ॥ २ ॥

उण बिन सब जग खारी लागत,
और बात सब काचो ।
'मीरा' श्रीगिरधर लालसूँ,
भगति रसीली जाँची ॥ ३ ॥

४७५

राग आसावरी

(ताल कहरवा मात्रा ४)

स्थाई

×	×	×	×
स स	रे — म म	प — प सं	ध — ध —
मैं तो	सां — व ल	के — रं ग	रा — ची —
प — — —	प — प प	प ध प म	— प ध प
रे — — —	सा — ज सि	गा — र बां	— ध प ग
ग रे स —	रे — रे रे	— म प सं	ध — ध —
घुं घ रू	लो — क ला	— ज त जि	ना — ची —
प — स स			
रे — मैं तो			

अन्तरा

	म म — प	ध ध ध —	सं — सं सं
	न ई — कु	म ति लई—	सा — धू की
रें ग़ं सं —	ध ध ध सं	— सं सं रें	सं गं रें सं
सं ग न ति	भ ग त रू	— प भ ई	सां — ची —

नी ध प —	रें — रें सं	गं रें सं सं	रें — नी सं
रे — — —	गा — ये गा	— ये ह रि	के — गु न
नी ध प प	स — रे म	— म प प	सं — नी —
नि स दि न	लो — क ला	— ज त जि	ना — ची —
ध प स स			
रे — मैं तो			

भजन मीरा

राग आसावरी

श्री गिरधर आगे नाचूंगी।

नाच नाच पिया रसिक रिझाऊं, प्रेमी जन को जाचूंगी।

प्रेम प्रीत के बांध घुंघरू, सूरत की कछनी काछूँगी।

लोक लाज कुल की मर्यादा, या में एक न राखूंगी।

पिया के पलंगना जाय बैठूंगी, मीरा हरी रंग राचूँगी।

भजन मीरा
राग आसावरी
(ताल तीन मात्रा १६)

स्थाई

×	२	०	३
	रे स	रे रे म म	प — सं —
	शिरी	गि र ध र	आ — गे —
ध — ध —	प — — —	प — प प	ध प म म
ना — चूं —	गी — — —	ना — च नां	— च पि या
प ध म प	ग — रे स	रे — म —	प प सं —
र स क रि	झां — ऊ —	प्रे — मी —	ज न को —
ध — ध —	प — रे स		
जा — चूं —	गी — शिरी		

अन्तरा

		म — म प	— ध ध —
		प्रे — म प्री	— त के —
सं — सं सं	रें नी सं —	प प प प	सं सं रें नी
बां — ध के	घूं घ रू	सु र त की	क छ नी —
रें सं नी ध	प — रेस		
ना — चूं —	गी शि री		

पाठ १५

राग भैरवी

१—इस राग में सात स्वर लगते हैं।

२—इस राग में 'रे॒ ग॒ ध॒ नी॒' कोमल बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

३—इस राग का वादी स्वर 'म' है।

४—इस राग का संवादी स्वर 'स' है।

५—इसके गाने-बजाने का समय प्रातः ६ बजे तक है।

आरोही स रे॒ ग॒ म प ध॒ नी॒ सं

अवरोही सं नी॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ स

राग भैरवी

ताल सरगम

ताल तीन मात्रा १६

स्थाई

×	२	०	३
		नी॒ स ग॒ म	ध॒— प—
म प ध॒ प	म प स ग॒	स रे॒ ग॒ म	प ध॒ नी॒ सं
सं नी॒ ध॒ प	म ग॒ रे॒ स		

अन्तरा

		ग॒ म ध॒ नी॒	सं— सं—
गं॒ रें॒ सं नी॒	सं— सं—	गं॒ रें॒ सं नी॒	ध॒ प म प
नी॒ ध॒ प म	ग॒ रे॒ स—		

भजन सूरदास

राग भैरवी

ताल तीन

सुनेरी मैंने निर्बल के बल राम।
पिछली साख भरूँ संतन की,
आड़े सँवारे काम ॥ १॥
जब लगि गज बल अपनो बरत्यो,
नेक सरयो नहिं काम।
निर्बल ह्वै बलराम पुकारयो,
आये आधे नाम ॥२॥
द्रुपद-सुता निरबल भई ता दिन,
तजि आये निज धाम।
दुश्शासन की भुजा चकित भई,
बसनरूप भये स्याम ॥३॥
अप-बल तप-बल और बाहु-बल,
चौथो है बल दाम।
'सूर' किसोर- कृपातें सब बल,
हारे को हरि-नाम ॥४॥

भजन सूरदास

राग भैरवी

ताल तीन मात्रा १६

स्थाई

×	२	०	३
नी	स ग म प	— ग म प	ग — स रे
सु	ने री में ने	— विर ब ल	के — ब ल
स — — —	— — — —	स रे ग —	म — म म
राम — —	— — — —	पि छ ली —	सा — ख भ
ग — प म	ग रे स —	प — प प	ध — नी सं
रूं — सं —	त न की —	आ — डे सं	वा — रे —
नीध पम नी			
काम — सु			

अन्तरा

		ग ग म म	ध ध नी नी
		ज ब ल गि	ग ज ब ल
सं सं सं सं	रें रें सं —	नी — नी नी	सं सं रें —
अ प नों —	व र स्यो —	ने — क न	स रि यो —
नी सं नी ध	नी ध प —	ग प प प	— प प —
का — —	— — म —	नि र ब ल हो	ये ज ब —

नी धु धु नी	प धु प —	सं — सं नी	धु प म —
रा — म पु	का—रेयो—	आ — ये आ	— ध — —
गु प म नी			
ना — म सु			

भजन सूरदास

राग भैरवी

मधुकर शाम हमारे चोर।
मन हर लियो माधुरी मूरत, निरख नैन की कोर॥
पकरे हुते आन उर अन्तर, प्रेम प्रीति के जोर।
गये छुड़ाये तोड़ सब बंधन, देगये हंसन आकोर॥
उचक परों जागत निसी बीते, तारे गिनत भई भोर।
'सूरदास' प्रभू मन मेरो सरवस, ले गयो नन्द किसोर॥

भजन सूरदास

राग भैरवी

(ताल तीन मात्रा १६)

स्थाई

×	२	०	३
	प धु प म	— गु — रे	स नी धु नी
	म धु क र	— शा म ह	मा — रे —

स — — स	स स स रे	ग — म —	र — ग म
चो — — र	म न ह र	ली — ने —	मा — धु रि
रे — स स	प प प प	ध नी सं —	प नी ध प
मू — र त	नि र ख नै	न की — —	को — — —
म ग प म			
ओ — — र			

अन्तरा

	ग ग म —	ध — नी —	सं — सं गं
	प क रे —	हो — ते —	आ न उ र
रें — सं —	नी नी सं —	— सं सं रें	नी सं ध नी
अं त र —	प्रे — म प्री	— त की —	को — ओ —
प ध प —	प ग प प	— प — —	नी ध नी नी
ओ — र —	ग ये छू डा	— ये — —	तो ड़ स ब
प ध प —	सं — सं सं	नी — ध प	म ग प म
बं ध न —	दे — ग ये	ह न स न	अ को — —
रे ग रे स			
ओ — — र			

भजन मीरा

राग भैरवी

आली री मेरे नैनन बान पड़ी।

चित चढ़ी मेरे सांवरी सूरत, उर बिच आन अड़ी।

कब की खड़ी तेरा पन्थ निहारूँ, अपने भवन खड़ी ।
'मीरा' गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहें बिगड़ी ।

भजन मीरा

राग भैरवी

(ताल कहरवा मात्रे ४)

स्थाई

×	×	×	^
धु प	म र गु —	स — रे रे	गु — स रे
आ ली	री मे रे —	नै — न न	वा — न प
स — — —	नी नी स गु	— म म —	रे — गु म
ड़ी — — —	चि त च ढी	ई मे रे —	सां — व री
रे — स स	म प प धु	सं नी धु प	म — धु प
सू — र त	उ र बि च	श्या — न श्र	ड़ी — आ ली

अन्तरा

गु गु म म	धु — नी नी	सं — सं गुं	रें रें सं —
क ब की ठा	ढी — ते रा	प थ नि —	हा — रूं —
नी नी — नी	सं सं सं सं	नी रें सं नी	धु धु प —
अ प ने —	भ व न ख	ड़ी ई — —	— — — —
गु — प प	प प प —	नी ध नी नी	धु प प —
मी — रा गि	र ध र —	हा — थ बि	का — नी —
प सं नी धु	प — धु प	म — धु प	म रे गु —
लो — ग क	हें — बि ग	ड़ी — आली	री मे रे —

भजन मीरा

राग भैरवी

ताल तीन

राम नाम रस पीजे,
मनुआं राम नाम रस पीजे।
तज कुसंग सतसंग बैठ नित,
हरि चरचा सुनि लीजे ॥१॥
काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ,
बहा चित से दीजे।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर,
ताहि के रंग भीजे ॥२॥

राग भैरवी

ताल तीन

स्थाई

×	२	०	३
		स प प प	— धु नी सं
		रा — म ना	— म र स
प नी धु प	गु प म —	गु — रे स	— रे गु म
पी — जे —	म नु आ —	रा — म ना	— म र स
रे — स —	— — — —	नी नी स गु	— म रे स
पी — ले —	— — — —	त ज कु सं	— ग स त

ग प म ग	— रे स स	प प प प	प — धनी सं
सं — ग वै	— ठ नि त	ह री च री	चा — सु र
प नी ध प	ग प म —		
ली — जे —	— — — —		

अन्तरा

		ग — म ध	— ध नी नी
		का — म क्रा	— ध म द
सं — सं ग	रें — सं —	नी नी — सं	— सं सं रें
लो — म —	मो ह को —	व हा — चि	— त से —
नी सं नी ध	नी ध प —	ग — प —	प — प प
ली — जे —	म नु आ —	मी — रा —	के — प्र भु
नी ध नी नी	प ध प प	सं — सं —	नी ध प प
गि र ध र	ना — ग र	तां — हीं —	के — रंग —
ग प म —	ग र ग —		
भी — जे —	म नु आ —		

पाठ १६

राग देस

१ इस राग में सात स्वर लगते हैं।
२ इस राग में नी दोनों बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं।
३ इस राग का वादी स्वर 'रे' है।
४ इस राग का संवादी स्वर 'प' है।
५ इस राग के गाने-बजाने का समय रात्री का है।

आरोही = स रे म प नी सं
अवरोही = सं नी ध प म ग रे ग स

राग देस

ताल सरगम

ताल तीन

स्थाई

×	२	०	३
		स र—म	प—नी नी
सं—सं—	नी नी सं सं	रें सं नी ध	प प म प
नी ध प म	ग र—		

अन्तरा

		म—म प	—प नी नी
सं—सं—	रें रें सं सं	नी—नी सं	—सं गं रें
मं — सं सं	नी ध प—	स रे म प	नी नी सं—
सं नी ध प	म ग रे—		

भजन सूरदास

राग देस

ताल तीन

रे मन, कृष्णनाम कहि लीजै ।
गुरु के वचन अटल करि मानहि,
साधु समागम कीजै
पढ़िये गुनिये भगति भागवत,
और कहा कार्य कीजै ।
कृष्णनाम बिनु जनमु वादिही,
बिरथा काहे जीजै ।
कृष्णनाम रस बह्यो जात है,
तृषावन्त ह्वै पीजै ।
'सूरदास' हरि सरन ताकिये,
जनम सफल करि लीजै ॥

भजन सुरदास

ताल तीन

स्थाई

१	२	०	०
	स रे म प रे—म न	ध ध भ ग कृष्ण—ना	रे ग स नी — म कहि
स — स— ली— जे —	स र म प रे—म न	प ध प म गु रु के—	रे ग स स व च न अ
स रे म म ट ल करि	प—प— मान्हीं	नी—नी नी सा—धू स	नी—सं सं मा—ग म
नी ध प— की—जे—	स र म प रे—मन		

अन्तरा

		म म ग र पढ़ ये	ग ग स— गुनि ये—
रे रे म म भ ग ति भा	प प प— — ग वत—	नीनी नीनी और क	नी सं सं— हा—का यँ
प नी सं रें की—ई—	सं नी ध प — जे — —	रें रें रें रें कृ ष्ण—ना	रें — मं मं —म बि नू
रें रें रें सं ज न म वा	— नी सं— — दि ही—	नी नी नीसं बि र था—	सं—नी ध का—है
प म ग र जी—जे—			

भजन मीरा

राग देस

(ताल कहरवा)

हरी तुम हरो जन की भीर।

द्रौपदी की लाज राखी,
तुरत बढ़ायो चीर॥

भगत कारण रूप नरहरि।
धरयो आप सरीर।

हिरण्याकुश मारि लीन्हों,
धरयो नाहिन धीर॥

बूड़तो गजराज राख्यौ,
कियौ बाहर नीर।

दासी 'मीरा' लाल गिरधर,
चरण कँवल पर सीर॥

ताल कहरवा

×	×	×	×
म	गम रग नृ.स	रे म — प	ध म ग —
ह	री — तुम	ह रो — ज	न — की —
रे — — म	गम रग नीम	ग — नी स	— म — —
भीर — ह	री — तुम	द्रो — प दि	— की — —
प — नी ध	— प — —	नी नी नी नी	— सं — —
ला — ज रा	— खी — —	तु रत बढ़ा	— यो — —
नी ध प म	ग रे — म		
चो — — —	रे — — ह		

अन्तरा

		म म मप	— नी नी —
		भ ग त का	— र ण —
सं — सं सं	संसं सं —	रें — रें — रें	मं — रें सं
रू — प न	र ह री —	धा — र्यो	आ — पं श
नीसं नीध	प — — —	संससं —	ना ध प —
री — — —	र — — —	ह र ना —	कु श — —
ध — प म	— ग रे —	स रे म —	प — नी सं
मार — र ली	— नो — —	ध र यो	ना — ही
नीध पमगरम	गम रग नीस		
धी — र—ह	री — तुम		

भजन मीरा २

राग देस

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।
जाके सीस मोर मुकुट, मेरो पति सोई॥
शंख चक्र गदा पद्म, कंठ माल सोही।
संतन ढिग बैठि बैठि, लोक लाज खोई॥
अब तो बात फैल गई, जानत सब कोई।
अंसुवन जल सींच सींच प्रेम बेलि बोई।
'मीरा' के प्रभु लगन लागी होनी हो सो होई॥

राग देस

(ताल दादरा मात्रा ६)

स्थाई

×			०			×			०		
ग	म	ग	रग		नी स	रे	म	ग	रे	—	—
मे	—	रे	तो		गिर	धर		गो	पाल	—	—
स	ग	ग	ग	म	रे	रे	ग	म	प	—	—
दू	—	स	रों	—	न	को	—	—	ये	—	—

अन्तरा

म	—	म	प	—	प	नी	—	सं	नी	सं	सं
जां	—	के	सी	—	स	मो	—	र	मु	क	ट
सं	—	ना	ध	म	—	मग	रेस	रेम	प	—	—
मे	—	रो	प	ति	—	को	—	—	ये	—	—

पाठ १७

राष्ट्रीय गान

जनगण-मन अधिनायक जय हे, भारत-भाग्य-विधाता !
पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा, द्राविड़, उत्कल, वंगा।
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा, उच्छल जलधि-तरंगा।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे।
गावे तव जय-गाथा !

जनगण-मंगलदायक जय हे, भारत भाग्य विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे ! जय जय जय जय हे !
अहरह तव अह्वान-प्रचारित, सुनि तव उदार वाणी,
हिन्दू-बौद्ध, सिख, जैन, पारसिक, मुसलमान, क्रिस्तानी,
पूरब पच्छिम आसे, तव सिंहासन पासे
प्रेमहार ह्विय गाथा !

जनगण ऐक्य विधायक जय हे, भारत-भाग्य-विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे ! जय जय जय जय हे !
पतन अभ्युदय बन्धुर पंथा युग-युग धावित यात्री,
तुमि चिरसारथि तव रथ चक्रे मुखरित पंथ दिन-रात्री,
दारुण विप्लव मांझे, तव शंखध्वनि बाजे,
संकट-दुःख त्राता !

जनगण पथ परिचायक जय हे, भारत-भाग्य-विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे ! जय जय जय जय हे !
घोर तिमिर घन निविड़ निशीथे पीड़ित मूर्च्छित देशे !
जाग्रत छिल तव अविचल मंगल नतनयने अनिमेशे,
दुःस्वप्ने. आतंके रक्षा करिले अंके,
स्नेहमयी तुमि माता !

जनगण दु:खत्रायक जय हे, भारत भाग्य विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे ! जय जय जय जय हे !
रात्रि प्रभातिल उदिल रविच्छवि पूर्व उदयगिरि भाले !
गाहे विहंगम पुण्य समीरण तव जीवन रस ढाले ॥
तव मरुणारुण रोग, निद्रित भारत जागे !
तव चरणों नत माथा !
जय जय जय हे जय राजेश्वर, भारत-भाग्य-विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे ! जय जय जय हे !

ताल कहरवा

+	+	+	+
स रे	ग ग ग ग	ग ग ग —	ग ग रे ग
ज ण	ग ण म न	अ धि ना —	य क ज य
म — — —	ग — ग ग	रे — रे रे	नी रे स —
हे — — —	भा — र त	भा — ग वि	धा — ता —
— — स —	प — प प	— प प प	प — प प
— — पं —	जा — ब सि	— ध गु ज	रा — त म
प ध म —	म — म म	म म म स	रे म ग —
रा ह टा —	द्रा — व ड़	उ त्क ल	बं — गा —
— — — —	स र ग म	ग — ग रे	ग प प ग
— — — —	वि न्ध्य हि	मा — च ल	य मु ना —
म — म —	ग — ग ग	ग ग रे रे	नी र स —
गं — गा —	उ च्छ च ल	ज ल धि त	रं — गा —

अन्तरा

ग म प ध	प नी ध —	ध — — —	प ध नी नी
शु भ्र ज्यो —	ति स ना —	म — — —	पु ल कि त
सं — नी सं	— — — —	सं सं नी नी	ध प — —
या - म नी म	— — — —	फु ल कु स	मि त — —
ग म ग रे	ग म प म	प — — —	स म — ग
द्रु म द ल	शो - भि नी	म — — —	सु हा — सि
म — — —	ग म प ध	प ध नी —	ध — — —
नी — म —	स मु धु र	भी - षण —	म — — —
गं रें गं —	सं — — —	सं रें गं —	— — — —
दु ख दा —	म — — —	व र दा म	— — — —
म ग रे म	— — ग म		
मा त र म	— — व न		

झण्डा-गायन

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥
सदा शक्ति बरसाने वाला।
प्रेम सुधा सरसाने वाला॥
वीरों को हरषाने वाला।
मातृ-भूमि का तन मन सारा॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।
स्वतन्त्रा के भीषण रण में॥
लख कर जोश बढ़े क्षण-क्षण में।

कांपें शत्रु देख कर मन में ॥
मिट जायें भय संकट सारा। झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

इस झण्डे के नीचे निर्भय।
लें स्वराज्य हम अविचल निश्चय।
बोलो भारत माता की जय।
स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा॥ झण्डा ऊँचा रहे हमारा।

आओ, प्यारे वीरो ! आओ,
देश धर्म पर बलि-बलि जाओ,
एक साथ सब मिल कर गाओ,
प्यारा भारत देश हमारा। झण्डा ऊंचा रहे हमारा॥

इसकी शान न जाने पाये।
चाहे जान भले ही जाये,
विश्व विजय हम कर दिखलायें,
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।
झण्डा ऊँचा रहे हमारा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा।

ताल कहरवा

स्थाई

ध़ — स स	रें ग म प	ग ग ग रें	स — स —
झं — डा —	ऊं — चा —	र हे — ह	मा — रा —
स सं — सं	सं नी ध प	प ध प म	गं — रें —
वि जै — वि	श्व — ति —	रं — गा —	प्या — रा —
ध़ — स स	रें ग म प	ग म ग रें	स — स —
झं — डा —	ऊँ — चा —	र हे — ह	मा — रा —

अन्तरा

रे म — म	म म म म	रे म प ध	म प प —
स दा — श	क्ति — व र	सा — ने —	वा — ला —
सं — सं सं	नो ध प म	प ध नो सं	नो ध प —
प्रे — म सु	धा — स र	सा — न —	वा — ला —
रें — रें —	सं रें नु सं	प नो प प	प — —
वी — रों —	को — ह र	शा — ने —	वा — ला —
सं — सं नो	— ध प —	प ध प म	ग — रे —
मा — तृ भू	— मि का —	त न म न	सा — रा —
ध — स स	रे ग म प	ग म ग रे	स — स —
झं — डा —	ऊँ — चा —	र हे — ह	मा — रा —

पाठ १८

शब्द

श्री गुरू ग्रंथ साहब

राग असावरो

राम सुमिर, राम सुमिर,
एही तेरो काज है ॥ टेक ॥
माया को संग त्याग,
हरिजूकी सरन लाग ।
जगत सुख मान मिथ्या,
झूठो सब साज है ॥ १ ॥
सुपने ज्यों धन पिछान,
कोहपर करत मान ।
बारूकी भीत ऐसें,
बसुधाको राज है ॥ २ ॥
'नानक' जन कहत बात,
बिनासि जैहै तेरो गात ।
छिन छिन करि गयो काल्ह,
तैसे जात आज है ॥ ३ ॥

ताल दादरा

स्थाई

×			०			×			०		
प	—	प	प	प	ध	म	प	म	ग	रे	स
रा	—	म	सु	मि	र	रा	—	म	सु	मि	र
रे	—	म	प	—	प	प	नी	ध	प	—	—
ए	—	ही	ते	—	रो	का	—	ज	है	—	—

अन्तरा

म	—	प	ऽ	—	—	सं	—	सं	सं	—	सं
मा	—	या	को	—	—	सं	—	ग	त्या	—	ग
प	—	प	सं	—	रें	ग॒ं	रें	सं	नी	ध॒	प
ह	—	री	जू	—	की	स	र	नी	ला	—	ग
प	ग॒ं	रें	सं	रें	सं	नी॒	सं	नी॒	ध॒	प	—
ज	ग	त	सू	—	ख	मा	—	न	मिथ्या		—
स	रे	म	प	|	प	प	नी॒	ध	प	—	—
झू	—	ठो	स	—	व	सा	—	ज	है	—	—

शब्द गुरु ग्रंथ साहब

राग भैरवी

दरशन वेख जीवां गुर तेरा,
पूरन करम होए प्रभ मेरा।

ए बेनती सुनो प्रभ मेरे,
देह नाम कर अपने चेरे।

अपनी सरन राख प्रभ दाते,
गुर परसाद किने विरले जाते।

सुनो विनो प्रभ मेरे मीता,
चरण कमल वसो मेरे चीता।

'नानक' एक कहे अरदास,
विसर नाही पूरन गुन तास।

राग भैरवीं

ताल दादरा

स्थाई

×	०	×	०
स प प	पधु प म	मप मगु —	रेम पधु पम
द र श न	वे ख जी	वां गु र	ते — रा
मप गु रे	सरे नी नी	सरु गु —	स रे स —
पू र ण	क र म हो	थे प्र भ	मे — रा —

अन्तरा

स स स	नीसं धु नी	सं सं गु	रें स —
एह बि न	ती — र म,	नो — प्र भ	मे रे
संगुं रें स	नी धु प	मगु प म	रे — स
दे ह, —	ना म क र	अ प ने —	चे — रा

भजन १

है प्रभु तेरी निराली शान है ।
आँख वालों को तेरी पहचान है ॥
है तूही मन्दिर व मसजिद में रमां ।
सब के हृदय में तूही भगवान् है ॥
पत्ते पत्ते में रमा है तू प्रभु ।
देख सकता है जिसे कुछ ज्ञान है ॥
मुझ को कन्यां जान कर मत भूलनां ।
मैं हूं दासी और तू भगवान् है ॥

ताल रूपक

+			०			+			०		
	—	नी	सरें सं	—		नी	—	—	ध प	ध धप	
हे	—	प्र	भू— ते	—		री	—	—	निरा	—	—ली
प	—	नी	ध— प	—		स	—	रे	ग—	म	प
शा	—	न	है— —	—		आं	—	ख	वा	लों	—
ध	—	प	म— ग	—		रे	—	ग	रे—	स	—
को	—	ते	री— प	ह		चा	—	न	है—	—	—

भजन २

हे प्रभु, हे प्रभु, हे प्रभु, हे प्रभु !
तेरा हर रंग देखा निराला प्रभु !!
तेरी आग में देखी ज्वाला प्रभु !!!
कहती फिरती है बुलबुल यही कूबकू
तूही तू, तूही तू, तूही तू, तूही तू
दिया सूरज को तूने उजाला प्रभु
तेरी आग में देखी ज्वाला प्रभु
सारे विश्व को तूने सम्भाला प्रभु
तूही तू तूही तू ... ...
देखा फूलों को जब खिलखिलाते हुए
तेरी महिमा के गीतों को गाते हुए
खुश्बू दे कर हमें यह सुनाते हुए
तूही तू ... ...
दुनियां ढूंडती फिरती तुझे दरबदर
मन्दिर मसजिद गिरजे में शामो-सहर
'वीर' कहते हैं सारे फरदो—बशर
तूही तू ... ...

ताल कहरवा

स्थाई

+	+	+	+
स स	म — ग म	प — म प	ध — नी ध
हे प्र	भू — हे प्र	भू — हे प्र	भू — हे प्र
प — स स	म — ग म	प — म प	ध — नी ध
भू — तू ही	तू — तू ही	तू — तू ही	तू — तू ही
प —			
तू —			

अन्तरा

सं सं	रें सं नी ध	प म प —	नी ध प —
ते रा	ह र र गं	दे — खा नि	— रा ला प्र
प — सं सं	रें सं नी ध	प म प प	नी ध प —
भू — ते री	आ — ग में	दे — खी ज	वा — ला प्र
प — सं सं	रें सं नी ध	प म प प	नी ध प —
भू — कह ती	धि र ती है	बु ल बु लया	ही — कु व
प — स स	म — ग म	प — म प	ध — नी ध
क — तु ही	तू — तु ही	तू — तू ही	तू — तु ही
प —			
तू —			

......

भजन ३

प्रीतम तेरे प्रेम में जिसने है मन रंगा लिया।
दीपक जला के ज्ञान का पर्दा दुई मिटा लिया॥
जीवन में एक बार भी जिसने लगाई हो लगन।
शैदा हुआ वह प्रेम में अपनी खुदी मिटा गया॥
देखी है जिसने हे प्रभू तेरे द्वारे की झलक।
दर दर की भिक्षा छोड फिर तेरे द्वारे आ गया॥
मानुष्य क्या जहान के जीव सभी गुण गा रहे।
बुलबुल भी तेरे प्रेम का नग़मा हमें सुना रहा॥
देखा चमन में फूल को उसमें तेरे जहूर को।
जलवा तेरा जहान में याद तेरी दिला रहा॥
'वीर' करूं उपाय क्या तेरी शरण में आने का।
तन मन में रमा है तू नैनों में तू समा रहा॥

ताल दादरा

स्थाई

+			०			+			०		
ध	प	ध	म	—	प	रे	—	ग	स	—	—
प्री	त	म	ते	—	रे	प्रे	—	म	में	—	—
ध	स	रें	म	—	प	ध	प	ध	प	—	—
जि	स	ने हैं	म	न	रं	गा	—	लि	या।	—	—
ध	प	ध	म	—	प	रे	—	ग	स	—	—
दीप	क	ज	ला	—	के	प्रे	—	म	का	—	—
ध	स	रें	स	—	प	ध	प	ध	प	—	—
पर	दा	दु	ईं	—	मि	टा	—	लि	या	—	—

अन्तरा

म	म	म	ध	—	नी	सं	—	नी	सं	—	—
जीव	न	में	ए	—	क	वा	—	र	भी	—	—
नी	नी	नी	नी	—	सं	नी	—	सं	ध	—	—
जिस	ने	ल	गा	—	ई	हो	—	न	ग	न	—

——

भजन ४

भगवान मोरी नैया उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना॥
दल बल के साथ माया घेरे जो मुझे आ कर।
तुम देखते न रहना झट आ के बचा लेना॥
सम्भव है झंझटों में मैं तुझ को भूल जाऊँ।
पर नाथ कहीं तुम भी मुझ को न भूला देना॥
तुम देव मैं पूजारी तुम इष्ट मैं उपासक।
यह बात सच है तो सच कर के दिखा देना॥

——

ताल कहरवा

+	×	+	+
म प	ग — रे रे	स रे नी स	रे ग म —
भ ग	वा — न —	मो — री न	यै या — —
— — प प	ग — — म	नी ध प म	ग रे स —
— — उ स	पा — — र	ल गा — दे	ना — — —
— — म प	ग — रे रे	स रे नी स	रे ग म —
— — अ ब	त क तो नि	भा — या —	है — — —
— — प प	ग — — म	नी ध प म	ग रे स —
— — आ —	गे — — भी	नि भा — दे	ना — — —
— —			
— —			

अन्तरा

नी नी	नी — — ध	प ध म —	प ध नी सं
द ल	ब ल — के	सा — थ —	मा — या —
— — — —	नी ध प —	म प — म	ग रे स —
— — — —	थे — रे —	हु ये — जो	मु झ को —
— —			
— —			